18 जनवरी 1969 - पिताश्री जी के अव्यक्त होने के बाद गुलजार बहन द्वारा अव्यक्त वतन से प्राप्त दिव्य सन्देश

प्रश्न - सभी पूछते हैं कि पिछाड़ी के समय आपने कुछ बोला नहीं। बाहर की सीन तो हम सभी ने सुनी है . लेकिन अन्दर क्या था - वह अनुभव भी सुनना चाहते हैं।

बाबा बोले - '' हां बच्ची . क्यों नहीं। बाबा अपने अनुभव सुनायेंगे। अच्छा . लो सुनो - बच्ची, खेल तो सिर्फ 10-15 मिनट का ही था। उस थोड़े से समय में ही अनेक खेल चले। उसमें भिन्न - भिन्न अनुभव हुए । पहला अनुभव तो यह था कि पहले जोर से युद्ध चल रही थी। किसकी ? योग बल और कर्मभोग की । भी फुल फोर्स में अपनी तरफ खींच रहा था और योग बल भी फुल फोर्स मे ही था । ऐसे अनुभव हो रहा था कि - जो भी शरीर के हिसाब - किताब रहे हुऐ थे वह फट से योग अग्नि मे भस्म हो रहे थे और मैं साक्षी हो देख रहा हूँ . जैसे अखाड़े में बैठ मल्लयुद्ध देखते हैं । मतलब तो दोनों का फोर्स पूरा ही था । कुद समय बाद कर्मभोग तो बिल्कुल निर्बल हो गया । बिल्कुल दर्द गुम हो गया । ऐसे ही अनुभव हो रहा था कि आखरीन में योगबल् ने कर्मभोग पर जीत पा ली । उस समय तीन बातें साथ-साथ चल रही थी । वह कौन सी ? एक तरफ तो बाबा से बातें कर रहा था कि बाबा आप हमें अपने पास बुला रहे हो । दूसरे तरफ यूं तो कोई खास बच्चों की स्मृति नहीं . लेकिन सभी बच्चों के स्नेह की याद शुद्ध मोह के रूप में थी। बाकी शुद्ध मोह की रग वा यह संकल्प कि छुट्टी नहीं ली वा और कोईभी संकल्प नही था । तीसरी तरफ यह भी अनुभव हो रहा था कि कैसे शरीर से आत्मा निकल रही है । कर्मातीत न्यारी अवस्था - जो बाबा ने पहले मुरली भी चलाई कि कैसे ' भा-भा ' होकर सन्नाटा हो जाता है . वैसे ही बिल्कुल डेड साइलेन्स का अनुभव हो रहा था और देख रहा था कि कैसे एक -एक अंग से आत्मा अपनी शक्ति छोड़ती जा रही है। तो कर्मातीत अवस्था का. मृत्यु क्या चीज है - वह अनुभव हो रहा था। यह है मेरा अनुभव।''

फिर हमने बाबा को कहा कि - बाबा . सभी बच्चे कहते हैं कि अगर हम सभी सामने होते तो बाबा को रोक लेते । तो बाबा ने कहा - बच्ची . रोक लेते तो यह ड्रामा कैसे होता। फिर हमने कहा - बाबा . यह सीन जैसे अब तो आर्टीफिशियल लग रही है . रीयल ड्रामा नहीं लगता। बाबा ने कहा कि -'' बच्ची . यह स्नेह की मीठी तार जुटी होने के कारण तुमको अन्त तक यह वण्डर ही देखने में आयेगा और अब भी तो सम्बन्ध है । भल साकार रथ गया है लेकिन ब्रहमा के रूप में अव्यक्त पार्ट बजा रहे हैं। '' बाबा ने कहा - '' मैं भी कभी -कभी साकार वतन में चला जाता हूँ। फिर शिव बाबा पूछते हैं कि कहा बैठे हो। यहा बैठे जैसे साकार वतन में . यह मकान बन रहा है . वहा तक जाता हूँ । '' मैंने कहा - बाबा . कभी - कभी लगता है कि जैसे बाबा चक्र लगा रहे हैं। बाबा ने कहा - ' मैं चक्कर लगाता हूँ ' तो वह भासना तो बच्चों को आयेगी ही। मतलब तो रूह - रूहान हो रही थी।

फिर बाबा ने एक दृश्य दिखाया । जैसे एक चक्रके अन्दर बहुत चक्र दिखाई पडे१। चक्रका ढंग ऐसे बनाया था कि उस चक्र से निकलने के ४-५ रास्ते दिखाईपड़े . परन्तु निकल न पाये। सिर्फ ब्रहमा बाबा का यह दिखाया कि चक्र में चलते - चलते प्वाइन्ट पर खड़े हो गये . निकले नहीं । बाबा ने समझाया कि - '' यह है ड्रामा का बनधन । ब्रह्मा भी ड्रामा के सर्कल (चक्र) से निकल नही सकते । ड्रामा के बनधन् से कोई भी निकल नहीं सकता । उस जीरो प्वसइनट तक पहुंच गये . लेकिन फिर भी ड्रामा का मीठा बन्धन है।'' उस मीठे बनधन को खेल के रूप में दिखाया। फिर मिश्री बादामी खिलाई। छुट्टी दी . बोला - जाओ बच्ची . टाइम हो गया है।